किरण बाला

बढ़ता जल संकट और जनचेतना की आवश्यकता

कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में तो ग्रीष्मकाल लोगों का काल बन जाता है। पानी के लिए त्राहि-त्राहि मच जाती है, जलस्रोत सूख जाते हैं। कहीं पानी की एक बूंद भी नहीं मिलती। परिणामस्वरूप कई-कई किलोमीटर दूर जाकर पानी का जुगाड़ करना पड़ता है। ग्रामीण अंचलों में पनघट से पानी भरने और उसे ढोकर लाने की सारी जिम्मेदारी महिलाओं पर होती है। अपने परिवार की जरूरत पूरी करने के लिए वे तपती दोपहर में लंबी दूरी तय करके जलस्रोत तक पहुंचती हैं और वह फिर वहां से पानी लाद कर लाती हैं। उनका अधिकांश समय पानी की मशक्कत में ही पूरा हो जाता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि जल संकट विश्वव्यापी है और दुनिया के अधिकांश देश इसकी पीड़ा भोग रहे हैं। गर्मियों में तो यह अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाता है और पानी की एक-एक बूंद के लिए लोग तरस जाते हैं। क्या इसके लिए केवल प्रकृति या मानसून ही जिम्मेदार है, आप और हम नहीं?

यद्यपि पृथ्वी के तीन चौथाई भू-क्षेत्र में पानी है, लेकिन इसमें से 97.3 प्रतिशत में समुद्र है। केवल 2.7 प्रतिशत पानी ही इस्तेमाल योग्य है। इसमें भी 1. 74 प्रतिशत हिमनद और बर्फ के रूप में है।

पानी मानव ही नहीं, प्रत्येक प्राणी की मूल जरूरत है। इसके बगैर जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। जो चीज इतनी महत्वपूर्ण है, उसकी कमी से संपूर्ण विश्व जूझ रहा है। छोटे-बड़े, विकसित और विकासशील सभी देश पेयजल संकट से जूझ रहे हैं। भारत भी इससे अछूता नहीं है अपितु यहां के हालात सर्वाधिक खराब हैं।

सालभर पहले जो स्थिति दक्षिण अफ्रीका के केपटाउन की थी, आज वही हालात फिलिपींस के मनीला के हैं। 7500 से ज्यादा द्वीपों वाले देश का प्रमुख शहर पानी का गंभीर संकट झेल रहा है। 24 घंटे लोग पानी के लिए जद्दोजहद कर रहे हैं। यूएन के मुताबिक, 2050 तक दुनिया के 200 शहर 'डे जीरो' झेलेंगे। इनमें 10 बड़े शहर बेंगलुरू, बीजिंग, इस्तांबुल, मैक्सिको सिटी, सना, नैरोबी, साओ पाउलो, कराची, काबुल और ब्यूनस आयर्स हैं। वाटरएड की रिपोर्ट में कहा गया है कि अगले 20 साल में 33 देश सबसे कम पानी वाले हो जाएंगे।

जनसंख्या के बढ़ते दबाव और जीवनस्तर में सुधार के कारण पानी की मांग निरंतर बढ़ती जा रही है। सीमित जल संसाधनों की वजह से पानी का संकट और गहरा सकता है। आने वाले समय में पानी के लिए और अधिक जूझना पड़ेगा।

यद्यपि दुनिया के 9 प्रतिशत बड़े बांध भारत में हैं, लेकिन इनमें कुल उपलब्ध पानी का मात्र 20 प्रतिशत ही संग्रहित हो पाता है। आज देश में बांधों की संख्या 4300 से अधिक है।

देश में उपलब्ध कुल पानी का 81 प्रतिशत सिंचाई के काम में, 3.8 प्रतिशत घरेलू तथा इतना ही औद्योगिक कामों में, 0.9 प्रतिशत ताप बिजली उत्पादन में तथा 10.5 प्रतिशत अन्य कामों में इस्तेमाल होता है।

पानी की जरूरत मोटे तौर पर 3 उद्देश्यों की पूर्ति के लिए होती है-खेती, उद्योग तथा इंसानों के उपयोग हेतु। पानी के अत्यधिक दोहन के फलस्वरूप जलस्तर हर वर्ष कम होता जा रहा है।

देश में कृषि की बढ़ती जरूरतों और जल प्रबंधन के धीमे क्रियान्वयन से स्वच्छ जल पर दबाव तेजी से बढ़ रहा है। देश में केवल 15 फीसदी ही वर्षा जल का उपयोग होता है। शेष ऐसे ही बहकर समुद्र में चला जाता है। वर्षा जल जमीन

के अंदर जितना अधिक डालेंगे, उतना ही तेजी से जल संकट से छुटकारा पाया जा सकेगा।

यदि देश में जमीनी क्षेत्रफल के पांच फीसदी क्षेत्र में होने वाली वर्षा का संग्रहण करें, तो एक अरब लोगों को प्रतिदिन 100 लीटर पानी उपलब्ध हो सकेगा। प्रत्येक बारिश के मौसम में 100 वर्ग मीटर आकार की छत पर 65 हजार लीटर वर्षा जल का संग्रहण किया जा सकता है। इस पानी से चार सदस्यों वाले एक परिवार की पेयजल और उसकी अन्य जरूरतों को आसानी से पूरा किया जा सकता है।

गौरतलब है कि देश में प्रतिवर्ष करीब 1869 घनमीटर भूजल उपलब्ध होता है जिसमें से मात्र 690 घन मीटर का ही इस्तेमाल हो पाता है। शेष 80 प्रतिशत पानी बिना किसी इस्तेमाल के समुद्र में बहकर बेकार चला जाता है।

पानी के अंधाधुंध दोहन के फलस्वरूप हर साल भूजल स्तर गिरता जा रहा है। अविवेकपूर्ण नीति, लगातार सूखा या अल्पवर्षा की वजह से भूजल अंतिम सीमा तक आ पहुंचा है। यदि जमीन से पानी दोहन की रफ्तार यही रही तो भूमि जलविहीन हो जाएगी।

विकास के पथ पर तेजी से आगे बढ़ने के दावों के बावजूद सच तो यह है कि देश की बहुसंख्यक आबादी को स्वच्छ पेयजल आज भी उपलब्ध नहीं है। सुदूर गांवों के बाशिंदे अपना कंठ गीला करने के लिए मीलों दूरी तय कर पानी का जुगाड़ करते हैं।

ग्रीष्म ऋतु की शुरूआत होते ही संपूर्ण देश में पानी का संकट व्याप्त हो जाता है। शहरों में स्थानीय निकाय जैसे तैसे उसकी पूर्ति करने की कोशिश करते हैं। नलों में पानी की आपूर्ति एक दिन छोड़कर से लेकर सप्ताह में एक बार करने की नौबत आ जाती है। पानी के टैंकरों से इसकी आपूर्ति का प्रयास किया जाता है, लेकिन वह ऊंट के मुंह में जीरा साबित होता है। सार्वजनिक नलों और पानी के टैंकर के लिए अलसुबह से ही लंबी कतारें लग जाती हैं।

कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में तो ग्रीष्मकाल लोगों का काल बन जाता है। पानी के लिए त्राहि-त्राहि मच जाती है, जलस्रोत सूख जाते हैं। कहीं पानी की एक बूंद भी नहीं मिलती। परिणामस्वरूप कई-कई किलोमीटर दूर जाकर पानी का जुगाड़ करना पड़ता है। ग्रामीण अंचलों में पनघट से पानी भरने और उसे ढोकर लाने की सारी जिम्मेदारी महिलाओं पर होती है। अपने परिवार की जरूरत पूरी करने के लिए वे तपती दोपहर में लंबी दूरी तय करके जलस्रोत तक पहुंचती हैं की मशक्कत में ही पूरा हो जाता है।

देश के लाखों गांवों के करोड़ों लोगों के लिए स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल का समुचित प्रबंधन नहीं है। अनेक गांव ऐसे हैं जहां पेयजल के अपने कोई स्रोत हैं ही नहीं और यदि एक दो हुए भी, तो वे गर्मियों में सूख जाते हैं और पानी के लिए त्राहि-त्राहि मच जाती है।

महिलाएं अल सुबह उठकर उन स्थानों की ओर निकल पड़ती हैं, जहां पानी हो। उनकी यह दूरी कम से कम एक किलोमीटर और अधिकतम छह किलोमीटर भी हो सकती है। इतनी दूर तक खाली घड़े, बाल्टियां ले जाना और उन्हें भरकर सिर अथवा कंधे पर लादकर लाने की पीड़ा एक भुक्तभोगी महिला ही समझ सकती है। दूरस्थ स्थानों से पेयजल की व्यवस्था एक या दो दिन की बात हो तो महिलाएं उसे जैसे-तैसे कर लें, लेकिन जब बात रोजाना की हो, तो उनका थकना स्वाभाविक है। सुबह उठकर घर परिवार के लिए जब वे पानी की तलाश में निकलती हैं, तो कई बार उन्हें खाली हाथ भी लौटना पड़ता है।

ग्रामीण अंचलों में पानी भरने और उसे ढ़ोकर लाने की सारी जिम्मेदारी महिलाओं पर होती है।

महिलाएं जब ग्रामीण क्षेत्रों की ऊबड़-खाबड़ पगडंडियों से पानी लाती हैं तो कई बार उनका संतुलन बिगड़ जाता है तथा वे गिर पड़ती हैं। यही नहीं, निर्जन रास्तों से गुजरने पर जंगली जानवरों के आक्रमण का भय तो लगा ही रहता है। कई बार सांप या बिच्छू भी उन्हें मौत की नींद सुला देते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ जगह ऐसी भी हैं जहां जल संकट की वजह से कोई पिता अपनी बेटी ब्याहना नहीं चाहता। ऐसे गांवों के निवासियों को ढूंढे से बहू नहीं मिलती और लड़कों को कुंआरे रहने की मजबूरी हो गई है। क्योंकि कोई पिता नहीं चाहता कि उसकी बेटी को पानी के लिए इतनी मशक्कत करनी पड़े।

विश्व बैंक की एक रिपोर्ट में भी कहा गया है कि भारत में जल का भविष्य चिंताजनक है। जल की मांग और आपूर्ति में अंतर बढ़ता जा रहा है और सन् 2050 तक यह अंतर 50 प्रतिशत से अधिक हो सकता है। वैसे वर्तमान में 7 खरब घनमीटर जल की मांग है जो बढ़कर 15 खरब घनमीटर तक हो जाएगी।

संविधान में मौलिक अधिकार और नीति निर्देशक तत्वों का उल्लेख है, जिसके मुताबिक पेयजल पाना नागरिकों का अधिकार है और उसकी व्यवस्था करना सरकार का कर्तव्य। लेकिन जब जल ही नहीं होगा तो सारे अधिकार और कर्तव्य बेमानी हो जाएंगे। भूमिगत जल का यदि अनावश्यक रूप से विदोहन किया जाएगा तो आगे आने वाली पीढ़ी के

लिए कुछ भी शेष नहीं रहेगा। इसलिए भूमिगत जल संरक्षण के प्रति अभी से ध्यान देना होगा। देश में जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है और उसी अनुपात में उसकी पानी की मांग भी बढ़ रही है जबकि पानी की आपूर्ति बढ़ने की बजाय घटती जा रही है, ऐसे में जनसाधारण को परेशानी होना स्वाभाविक है।

देश के पर्वतीय प्रदेशों में भूजल स्तर तेजी से घट रहा है और वहां के लोग पानी की बूंद-बूंद के लिए तरस रहे हैं। पानी संकट से त्रस्त लोग अपने गांव छोड़-छोड़ कर अन्यत्र जा रहे हैं।

प्रकृति ने देश में अनेक नदियां, झील, झरने आदि की सौगात दी है, लेकिन हम अपनी उदासीनता, चूक या लापरवाही की वजह से उनका सही उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। वर्षा के मौसम में बाढ़ की स्थिति निर्मित हो जाती है तथा यह पानी बहकर समुद्र में चला जाता है। क्या इस पानी को सूखे के समय के लिए रोका या संग्रहित नहीं किया जा सकता? बात कठिन अवश्य है, लेकिन असंभव नहीं।

जब गर्मी का मौसम आता है और जल स्रोत सूखने लगते हैं, तब सर्वाधिक कष्ट होता है। कई-कई मीलों दूर जाकर पानी का जुगाड़ करना पड़ता है। सारा समय पानी के जुगाड़ में ही बीत जाता है।

स्थानीय निकायों, यथा नगर पालिका, नगर निगम आदि द्वारा लोगों को जल प्रदाय किया जाता है। लेकिन उसकी भी एक सीमा होती है। जितना जल संचित है, उसे वर्षभर चलाना है इसलिए शुरू में रोजाना जल की आपूर्ति की जाती है, फिर एक दिन छोड़कर, दो दिन छोड़कर या सप्ताह में एक या दो बार ही जल सप्लाई किया जाता है। यह उनकी मजबूरी है। जब नलों में पानी नहीं आता या कम आता है तो हम आक्रोशित हो जाते हैं और स्थानीय निकायों को कोसते हैं। लेकिन उन्हें कोसने से क्या होगा? पानी किसी फैक्ट्री में पैदा नहीं होता कि उसका उत्पादन बढ़ाया जा सके। प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए जल में हम किंचित मात्र भी वृद्धि नहीं कर सकते। हां, यदि समझदारी से काम लें, तो इस संकट को कम किया जा सकता है।

कीटनाशकों तथा उर्वरकों द्वारा भी जलस्रोत प्रदूषित हो रहे हैं। अपनी फसलों को कीटों से बचाने के लिए किसान कीटनाशकों का छिड़काव करते हैं और पैदावार बढ़ाने के लिए रासायनिक उर्वरकों का इस्तेमाल करते हैं। ये दोनों ही वर्षा जल के साथ बहकर जलस्रोतों में पहुंच जाते हैं। यही कारण है नदियों, तालाबों, नहरों, झीलों आदि का जल प्रदूषित हो जाता है।

औद्योगीकरण के साथ-साथ पानी की मांग भी तेजी से बड़ी है। सीमेंट, चमड़ा, कागज, इस्पात आदि उद्योगों में पानी की खपत बहुत होती है। एक टन इस्पात के उत्पादन में 70 गैलन तथा एक टन सीमेंट बनाने में 750 गैलन पानी खर्च होता है।

प्राकृतिक और कृत्रिम जलस्त्रोतों के प्रति बरती जाने वाली उदासीनता की वजह से भी जलसंकट विकराल रूप ले रहा है। अतिक्रमण की वजह से तालाब लुप्त होते जा रहे हैं। तालाब को पाटा जा रहा है और उस जगह विशाल इमारतें, औद्योगिक परिसर आदि निर्मित कर दिए हैं। तालाब के साथ-साथ झीलें भी अतिक्रमण की चपेट में आ गई हैं।

नदियां इतनी प्रदूषित हो चुकी हैं कि उनका पानी पीने या अन्य इस्तेमाल के योग्य नहीं बचा है। इसलिए नदियों में पानी हो, तब भी वह किसी काम का नहीं। नदियों को हम ही प्रदूषित करते हैं। लोग शव का जलदाह करते हैं यानी मृतक के शव को नदी में बहा देते हैं। मृत पशु, मवेशी भी उसमें बहते देखे जा सकते हैं। उद्योगों और फैक्ट्रियों से निकला जहरीला रसायन भी पानी को प्रदूषित कर देता है। दूषित पानी को भी उपचारित किए बगैर नदी में छोड़ दिया जाता है।

हमारे घरों में भी जल का अपव्यय बहुत होता है। घर आंगन को धोने, बागवानी करने आदि में जरूरत से ज्यादा पानी इस्तेमाल किया जाता है। सवेरे उठकर ब्रश करते समय वॉशबेसिन का नल चालू रखा जाता है, पुरुष दाड़ी बनाते समय उतनी देर उसे चालू रखते हैं। वाशिंग मशीन में जरूरत से ज्यादा पानी लगाते हैं आरओ मशीन से जितना पानी पीने योग्य निकलता है, उससे कहीं अधिक व्यर्थ चला जाता है, जिसका कोई इस्तेमाल नहीं होता।

सच तो यह है कि जल संकट

पानी को लेकर लोग जागरूक नहीं हैं। यदि वे देख लेते हैं कि कहीं कोई पाइप लाइन फूटी हुई है, तो वे संबंधित विभाग को सूचित करने की बजाय उसे अनदेखा करते हुए चलते बनते हैं। जैसे उनका इससे कोई वास्ता ही न हो। आखिर हम अपनी जिम्मेदारी कब समझेंगे? कब एक अच्छे नागरिक होने का परिचय देंगे?

वर्षा ऋतु के दौरान संचित जल का उपयोग सालभर किया जा सकता है।

जितना कुदरती नहीं है, उतना हम पैदा करते हैं। जल के प्रति जनचेतना का अभाव है। यही कारण है कि हम वर्षा जल को सहेजने की बजाय उसे यूं ही नष्ट कर देते हैं और जब गर्मी आती है तो हम हाहाकार मचाते हैं।

पानी कुदरत का अमूल्य उपहार है। चूंकि इसे प्राप्त करने के लिए कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ता, इसलिए हम उसका दुरूपयोग करते हैं। पानी की कीमत लोग समझते ही नही है। यदि समझते तो उसका इस्तेमाल मितव्यतापूर्वक करते। हमारी लापरवाही ही इसके लिए जिम्मेदार है।

पानी के प्रति हम कितने लापरवाह हैं, यह इसी से समझ में आ जाता है कि लोग सार्वजनिक नलों की टोटियां खोलकर ले जाते हैं और पानी निरंतर बहता रहता है। परिणामस्वरूप कुछ ही समय में टंकी खाली हो जाती है। यही बात हमारे घरों की है। नल टपकते रहते हैं, लेकिन टोटियां बदलने पर विचार नहीं करते। परिणामस्वरूप रातभर में टंकी खाली हो जाती है। जरा सोचिए, ऐसा करके हम कितना पानी व्यर्थ बहा देते हैं?

बूंद-बूंद से घड़ा भरता है, यह कहावत सौलह आने सच है। लेकिन जब घड़े में पहले से ही पानी का टोटा हो और उसमें भी हम आधा गिलास पीकर आधा गिलास फेंक देते है। काश, गिलास में उतना ही पानी लेते, जितना पीना हो, तो आधे पानी की बचत हो सकती। जरा सोचिए, घर का प्रत्येक सदस्य हर बार इस बात का पालन करें कि जितना जरूरी हो, उतना ही पानी भरे, तो पानी का अपव्यय होने से रोका जा सकता है।

वाहनों की धुलाई में काफी पानी खर्च होता है। वर्कशॉप में जब टू व्हीलर या फोर व्हीलर वाहन धुलते हैं तो पानी प्रेशर से डालना पड़ता है। हर रोज देश में लाखों वाहन इस प्रकार धुलते हैं और वह पानी व्यर्थ चले जाता है।

मकान बनाते समय उसकी मजबूती के लिए तरी की जाती है। दिन में दो या तीन बार तरी की जाती है। पहले तो भवन निर्माण में ही काफी पानी खर्च होता है और ऊपर से तरी करना। बेहतर होगा कि गर्मी की बजाय सर्दी या बारिश के मौसम में मकान निर्माण का काम शुरू किया जाए, ताकि पानी की जरूरत कम हो।

पानी को लेकर लोग जागरूक नहीं हैं। यदि वे देख लेते हैं कि कहीं कोई पाइप लाइन फूटी हुई है, तो वे संबंधित विभाग को सूचित करने की बजाय उसे अनदेखा करते हुए चलते बनते हैं। जैसे उनका इससे कोई वास्ता ही न हो। आखिर हम अपनी जिम्मेदारी कब समझेंगे? कब एक अच्छे नागरिक होने का परिचय देंगे?

पानी हमारी मूल आवश्यकता है। जल ही जीवन है। इसके बगैर हम अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकते। लेकिन यह भी जरूरी है कि पेयजल प्रदूषण रहित अथवा सुरक्षित हो। जल प्रदूषण को रोकना हर नागरिक की जिम्मेदारी है। लेकिन होता इसका उल्टा है। लोग जल को प्रदूषित करने से बाज नहीं आते। जल का स्रोत चाहे जो है, वे उसमें गंदगी फैलाकर उसे दूषित कर देते हैं। ऐसे में सुरक्षित पानी मिलना बड़ा मुश्किल हो जाता है। जल संकट के लिए कमजोर मानसून ही एकमात्र कारण नहीं है। इससे बड़ा कारण प्रभावी जल प्रबंधन का अभाव है।

पानी को साधारण वस्तु समझकर उसे पानी की तरह बहाने की भूल का खामियाजा आज सारा देश भुगत रहा है। शासन प्रशासन को दोष देने से क्या होगा? जब तक लोग नहीं सुधरेंगे या जल के प्रति चेतना और जागरूकता जागृत नहीं होगी, जलसंकट कभी दूर नहीं हो सकता।

प्रकृति की उदारता या मेहरबानी का यदि हम दुरूपयोग करें या पानी को व्यर्थ में बहाएं तो उसकी कमी सदैव बनी रहेगी।

प्राकृतिक पानी को हर स्तर पर बचाने और संग्रहित करने की आवश्यकता है। न केवल नए जलाशयों को बनाने की जरूरत है अपितु पहले से स्थापित जलाशयों का चौड़ीकरण भी आवश्यक है।

देश के हर नागरिक को जल संरक्षण से जुड़ना होगा। वर्षा के मौसम में घरों की छतों से पानी सड़कों या नालियों में व्यर्थ बह जाता है। छतों से गिरते पानी को एकत्र किया जा सकता है। उसे जमीन के भीतर पहुंचा दिया जाए, तो भूमिगत जल स्तर भी बढ़ता है। इससे कुएं, हैंडपंप, बोरिंग आदि सूखेंगे ही नहीं भवन निर्माण की अनुमति देते समय इस शर्त को लागू किया जा सकता है। छोटे-छोटे चेकडेम बनाकर वर्षा के पानी को संरक्षित किया जा सकता है।

भूजल का दोहन तो हर कोई करना चाहता है, लेकिन कितने लोग भूजल पुनर्भरण का प्रयास करते हैं या उस दिशा में सोचते हैं? यह ध्यान रखना हम सभी का कर्तव्य है कि वर्षा का पानी बहकर समुद्र में न चला जाए अपितु उसे पृथ्वी के भीतर पहुंचाने का प्रयास करें। ऐसा करने से पेयजल संकट से निजात मिल सकती है।

गांवों में तालाब भी जल के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। लेकिन वे भी प्रदूषण मुक्त नहीं हैं। लोग तालाब किनारे शौच करते हैं, धोबी कपड़े धोते हैं, लोग नहाते हैं। इन सबसे तालाब का पानी गंदा, दूषित हो जाता है। तालाब में सूक्ष्म कीड़े भी हो जाते हैं। यदि मछलीपालन किया जाए, तो तालाब का शुद्धिकरण हो सकता है। क्योंकि मछलियां जल में

पानी को साधारण वस्तु समझकर उसे पानी की तरह बहाने की भूल का खामियाजा आज पूरा देश भुगत रहा है।

मौजूद सूक्ष्म कीटों को खाकर तालाब के पानी को शुद्ध बनाए रखती हैं।

स्वयंसेवी संस्थाएं, एनजीओ और अन्य सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक संगठनों को जल चेतना जागृत करने में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। स्कूल-कॉलेजों के पाठ्यक्रमों में भी इसे शामिल करना चाहिए, ताकि जनसाधारण पानी की महत्ता को समझ सके तथा उसका अपव्यय रोके।

कुछ सावधानी और सतर्कता बरत कर हम पानी के अपव्यय को रोक सकते हैं। जब कभी आप कुछ दिनों के लिए घर से बाहर जाते, तो पानी के मेन वाल्व को बंद कर दें। ताकि ऊपर की टंकी से सप्लाई बंद हो जाए। इसी प्रकार, यदि हौज का नल चालू हो तो उसे भी बंद करके जाएं। अन्यथा हौज भरने के बाद वह ढुलता रहेगा।

हमारे देश में सिंचाई की परंपरागत विधियों को अपनाया गया है, जिसमें पानी का अपव्यय होता है। ये विधियां आसान और सस्ती भले ही हैं, लेकिन जब जल संकट हो तो इन्हें व्यावहारिक नहीं माना जा सकता। क्यारी विधि, बौछारी विधि, थाला विधि, कटवां विधि, आदि की तुलना में टपक विधि से सिंचाई करने से पानी कम खर्च होता है। जल संरक्षण आज समय की आवश्यकता है। इससे गिरते भूजल स्तर को रोका जा सकता है। वर्षभर जल की उपलब्धता बनाए रखी जा सकती है।

भारतीय धर्म और संस्कृति में भी पानी के अपव्यय को रोकने हेतु बल दिया गया है। जैन धर्म में जल के न्यूनतम उपयोग की बात कही गई है। न्यूनतम पानी से स्नान करने, सूखे बर्तन मांजने जैसी बातों पर जोर दिया गया है।

कुछ लोगों की धारणा है कि बोरवेल का पानी सुरक्षित या प्रदूषणरहित होता है लेकिन ऐसा है या नहीं, खुदाई के बाद उसके पानी की लेबोरेटरी में जांच करा लेना चाहिए ताकि पता चल सके कि वह पीने योग्य है या नहीं? कहीं उसमें कोई हानिकारक तत्व तो मौजूद नहीं? उसका टीडीएस भी चैक कराते रहना चाहिए।

पानी बचाना अथवा उसे सहेज कर रखना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यदि ऐसा नहीं किया गया तो भविष्य में हालात और भी बदतर हो जाएंगे।

प्रकृति ने देश में अनेक नदियां, झील, झरने आदि की सौगात दी है, लेकिन हम अपनी उदासीनता, चूक या लापरवाही की वजह से उनका सही उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। वर्षा के मौसम में बाढ़ की स्थिति निर्मित हो जाती है जो समुद्र में चले जाता है। क्या इस पानी को सूखे के समय के लिए रोका या संग्रहित नहीं किया जा सकता? बात कठिन अवश्य है, लेकिन असंभव नहीं।

मानसून का अपना एक समय होता है, तब बारिश होती है। इस पानी को विभिन्न तरीकों से बचाना होगा।

लोगों को पानी का महत्व और उसे बचाने के बारे में बताने के लिए संयुक्त राष्ट्र की सभा ने 1993 में हर साल 22 मार्च को 'विश्व जल दिवस' मनाने का संकल्प लिया था। तब से यह हर साल मनाया जाता है। हालांकि हर वर्ष इसकी थीम भिन्न होती है। यदि विगत पांच वर्षों की बात करें तो 2015 में "वाटर एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट", 2016 में "बेटर वाटर, बेटर जॉब्स", 2017 में "व्हाय वेस्ट वाटर", 2018 में "केयर फॉर वाटर" 2019 में "लीविंग नो वन बिहाइंड" 2020 में "वाटर एंड क्लाहमेट चेंज" तथा 2021 में वैल्यूहंग वाटर" की थीम रखी गई।

दरअसल, लोग पानी की महत्ता नहीं जानते। जब तक वह उपलब्ध होता है, तब तक उसका दुरूपयोग होता रहता है और जब उसकी कमी होने लगती है तो पानी को लेकर कोहराम मच जाता है। काश, यदि आमजन पानी की उपयोगिता को समझें तथा उसका मितव्ययतापूर्वक इस्तेमाल करें तो पेयजल संकट से कुछ तो राहत मिल ही सकती है।

सरकार अपने स्तर पर पेयजल संकट से राहत दिलाने की कोशिश करती है, लेकिन प्रकृति की निष्ठुरता के कारण वह भी अपने घुटने टेक देती है। पानी को पैदा नहीं किया जा सकता है। जो है, जितना है, उसी से काम चलाना होता है। इसलिए आज की नहीं, भविष्य की चिंता करें। यदि हमने भविष्य के प्रति आंख मूंद ली तो आगे आने वाली पीढ़ी प्यासी ही रह जाएगी।

सपंर्क करें:
किरण बाला
43/2 सुदामानगर, रामटेकरी, मन्दसौर
मध्य प्रदेश-458 001
मो. 9826042811
ईमेलः
anucomputer@rediffmail.com